Growing indifference towards Sanskrit language

डा. अशोक कुमार बाजपेयी: सभापति जी, मैं आप आपके माध्यम से लोकतंत्र के सर्वोच्च सदन के समक्ष एक गंभीर विषय रखना चाहता हूं। मान्यवर, संस्कृत भाषा हमारे देश की 5,000 वर्ष पुरानी भाषा है और दुनिया की सबसे प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। दुनिया का सबसे समृद्ध साहित्य संस्कृत वांगमय लिखा गया। संस्कृत भाषा में वेदों की रचना हुई, उपवेदों की रचना हुई, उपनिषद् की रचना हुई, महाभारत की रचना हुई, गीता की रचना हुई, वाल्मीकी रामायण की रचना हुई और न जाने ऐसे कितने दुर्लभ ग्रन्थों की रचना संस्कृत भाषा में हुई। आज संस्कृत भाषा की उस समृद्धता का लाभ दुनिया के तमाम दूसरे देश उठा रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्य के साथ कहना पड़ता है कि जहां संस्कृत का जन्म हुआ और जहां संस्कृत की इतनी सारी रचनाएँ लिखी गईं, उस देश में संस्कृत के प्रति जो उपेक्षा हो रही है, वह हम सबके लिए गम्भीर चिन्ता की बात है।

मान्यवर, आज स्थिति यह है कि संस्कृत विद्यालयों में शिक्षकों का अभाव है, संस्कृत विद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्ति नहीं हो रही है। संस्कृत पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य अधर में है, उनको कहीं रोजगार से जोड़ा नहीं जा रहा। अगर इसी तरह से चलता रहा, तो एक दिन संस्कृत जैसी भाषा विलुप्त हो जाएगी। संस्कृत में आयुर्वेद से लेकर गणित, खगोलशास्त्र, वैमानिकी आदि तमाम दुर्लभ साहित्य लिखे गए, जिस पर आज भी वैज्ञानिक शोध करने का काम कर रहे हैं। मान्यवर, हमारी यह देव वाणी, यदि आज हमारे ही देश में विलुप्त होगी, तो हम लोगों के लिए इससे बड़ी कोई शर्म की बात नहीं होगी। आज देश का यह सर्वोच्च सदन बैठा हुआ है और मैं इस सदन के सामने पक्ष-विपक्ष का ध्यान रखे बिना अपनी बात रखना चाहता हूं कि हमारे देश की यह वैदिक भाषा और सबसे प्राचीन भाषा का संरक्षण कैसे होगा? जब तक संस्कृत की शिक्षा पाने वाले लोगों को रोज़गार से नहीं जोड़ा जायेगा, तब तक इसका संरक्षण कैसे संभव होगा? पहले संस्कृत भाषा हाई स्कूल और इण्टरमीडिएट तक अनिवार्य हुआ करती थी, आज धीरे-धीरे राज्यों ने उसकी अनिवार्यता को समाप्त कर दिया है, आज संस्कृत के पठन-पाठन का काम इण्टरमीडिएट से लेकर महाविद्यालयों तक बहुत सीमित हो गया है। बहुत कम महाविद्यालय हैं, जहां संस्कृत जैसे विषय पढ़ाए जाते हैं। मान्यवर, इस पर अगर कोई राष्ट्रव्यापी नीति नहीं बनाई गई, यद्यपि शिक्षा राज्यों का विषय है, लेकिन मान्यवर, आज जैसे सभापति के रहते, हम सब अपेक्षा करते हैं कि इस पर गंभीर चिंता होनी चाहिए कि संस्कृत को कैसे पुनर्जीवित किया जाए, कैसे स्थापित किया जाए।

आज के वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर के लिए संस्कृत सबसे ज्यादा उपयोगी है, संस्कृत में जितना बड़ा शब्दकोश है, शायद किसी भी भाषा में इतना बड़ा शब्दकोश नहीं है। अपनी अभिव्यक्ति की जितनी ताकत संस्कृत में है, यह ताकत किसी और भाषा में नहीं है। मान्यवर, दुनिया की सबसे समृद्ध भाषा, सबसे प्राचीन भाषा और दुनिया की सबसे दुर्लभ भाषा और हमारी देव वाणी, जिस पर हमको गर्व होता था, हमारी संस्कृति और हमारे संस्कार उसी संस्कृत के तमाम ग्रन्थों से प्राप्त हुए हैं और जिस संस्कृति पर हम गर्व करते हैं, जिस भारतीयता पर हम गर्व करते हैं, वह भी इस संस्कृत की देन है।

मान्यर, आज हमारे बीच में मानव संसाधन विकास मंत्री जी भी बैठे हैं, मैं चाहूंगा ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति: श्री स्वप्न दास गुप्ता जी ...(व्यवधान)... रिकॉर्ड में नहीं जाएगा, ठीक है।

श्री विजय पाल सिंह तोमर (उत्तर प्रदेश): महोदय, मैं स्वयं को इस विषय के साथ संबद्ध करता हूं।

श्री सकलदीप राजभर (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ सम्बद्ध करता हूं।

श्री शिव प्रताप शुक्ल (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ सम्बद्ध करता हूं।

श्री अमर शंकर साबले (महाराष्ट्र) : महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ सम्बद्ध करता हूं।

श्री महेश पोद्दार (झारखंड) : महोदय, मैं भी स्वयं को इस विषय के साथ सम्बद्ध करता हूं।

SHRI G.V.L. NARASIMHA RAO (Uttar Pradesh): Sir, I associate myself with the Concern expressed by the hon. Member.

SHRIMATI KANTA KARDAM (Uttar Pradesh): Sir, I associate myself with the concern expressed by the hon. Member.

SHRI HARNATH SINGH YADAV (Uttar Pradesh): Sir, I associate myself with the issue raised by the hon. Member.

SOME HON. MEMBERS: Sir, we all associate ourselves with the concern expressed by the hon. Member.

Organising Poush Mela at Vishwa Bharati, Shantiniketan

SHRI SWAPAN DASGUPTA (Nominated): Sir, I would like to bring to your notice a certain stalemate which has developed in West Bengal in relation to Vishwa Bharati University which is now a Central University, founded by Gurudev Rabindranath Tagore. Sir, for a long time since 1894, in fact, one of the main functions associated with Vishwa Bharati has been organising something called the Poush Mela. It is a fair which is undertaken during winter. It draws participation of a large number of people in and around the place and has become an important facet of Bengal's cultural identity. Now, Sir, over the past few years, the scope and scale of this fair has grown exponentially to the extent where lakhs and lakhs of people now come and it has become more or less impossible for the university authorities to be able to handle it. After all, university is not an event management centre. As a result, there have been serious strictures against the university, against this whole thing by the National Green Tribunal and the Vice-Chancellor in a passing reference to this said, 'If this continues, I will be spending the next year going only to the Green Tribunal rather than on the affairs of the University.' Sir, this is an important cultural institution of Bengal. It is a Central University. The fair is held in the premises of Vishwa Bharati. Vishwa Bharati Court has said, 'Please divest us. We are no longer in a position to actually undertake